अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी व्यवहार का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण (वर्तमान संदर्भ में)

संदीप कुमार लौरा

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, मानविकी संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा - 124021

सार

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक तंत्र है, जिसकी सफलता का आधार स्वतंत्र, निष्पक्ष और नियमित चुनाव हैं। चुनावी व्यवहार से आशय उन विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से है जो मतदाता के मतदान निर्णय को प्रभावित करते हैं। समय के साथ भारत में चुनावी व्यवहार में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं। प्रारंभिक चुनावों में जाति, धर्म, भाषा तथा स्थानीय नेतृत्व प्रमुख निर्धारक थे, जबकि वर्तमान समय में विकास, सुशासन, राष्ट्रीय सुरक्षा, डिजिटल मीडिया, कल्याणकारी योजनाएँ तथा नेतृत्व की छवि भी महत्वपूर्ण कारक बन चुके हैं।

वर्तमान दौर में सोशल मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी तथा युवा मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी ने चुनावी राजनीति को नई दिशा प्रदान की है। महिला मतदाताओं की बढ़ती सक्रियता तथा सरकारी योजनाओं के प्रत्यक्ष लाभार्थियों की संख्या में वृद्धि ने भी मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है। इसके साथ ही चुनावी प्रचार के आधुनिक साधनों, राजनीतिक दलों की रणनीतियों तथा चुनाव आयोग की सक्रियता ने चुनावी प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी एवं प्रतिस्पर्धात्मक बनाया है।

यह शोधपत्र भारतीय लोकतंत्र में चुनावी व्यवहार के बदलते स्वरूप का समकालीन संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा उन प्रमुख कारकों की समीक्षा करता है जो वर्तमान चुनावी राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं।

मुख्य शब्दः भारतीय लोकतंत्र, चुनावी व्यवहार, मतदाता, सोशल मीडिया, विकास, लोकतंत्र, राजनीतिक दल।

प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान मतदान का अधिकार प्राप्त है। भारतीय संविधान ने लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाकर नागरिकों को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार प्रदान किया। चुनाव केवल प्रतिनिधियों के चयन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जनता की राजनीतिक चेतना, सामाजिक जागरूकता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का भी दर्पण है।

चुनावी व्यवहार राजनीतिक विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। इसका संबंध मतदाताओं के मतदान संबंधी निर्णयों तथा उन कारकों से है जो मतदान को प्रभावित करते हैं। चुनावी व्यवहार का अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि मतदाता किस आधार पर किसी राजनीतिक दल या उम्मीदवार का समर्थन करते हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारत में हुए प्रथम आम चुनाव (1951-52) से लेकर वर्तमान समय तक चुनावी व्यवहार में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रारंभिक वर्षों में मतदाता जाति, धर्म, स्थानीय प्रभावशाली नेताओं तथा राजनीतिक दलों के प्रति निष्ठा के आधार पर मतदान करते थे। धीरे-धीरे शिक्षा, शहरीकरण, आर्थिक विकास, संचार क्रांति तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार ने मतदाताओं की सोच को प्रभावित किया।

वर्तमान समय में मतदाता केवल जातीय या धार्मिक आधार पर मतदान नहीं करते, बल्कि विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, राष्ट्रीय सुरक्षा, भ्रष्टाचार, नेतृत्व क्षमता तथा सरकारी योजनाओं के प्रभाव का भी मूल्यांकन करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, एक्स (पूर्व में ट्विटर), इंस्टाग्राम तथा यूट्यूब ने चुनावी प्रचार की शैली को पूरी तरह बदल दिया है। राजनीतिक दल अब डिजिटल प्रचार, डेटा विश्लेषण तथा लक्षित अभियान के माध्यम से मतदाताओं तक पहुँचते हैं।

युवा मतदाताओं की बढ़ती संख्या भी चुनावी व्यवहार में परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारण है। भारत में प्रत्येक चुनाव में लाखों नए मतदाता जुड़ते हैं, जिनकी प्राथमिकताएँ पारंपरिक मतदाताओं से भिन्न होती हैं। वे रोजगार, तकनीकी विकास, डिजिटल सेवाओं, पारदर्शिता तथा सुशासन जैसे मुद्दों को अधिक महत्व देते हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि भी भारतीय लोकतंत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अनेक राज्यों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर अथवा उससे अधिक हो चुका है। उज्ज्वला योजना, जनधन योजना, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी योजनाओं ने लाभार्थी आधारित मतदान व्यवहार को भी प्रभावित किया है।

हालाँकि आज भी जाति, धर्म तथा क्षेत्रीय पहचान का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। अनेक राज्यों में चुनावी राजनीति अभी भी जातीय समीकरणों तथा क्षेत्रीय मुद्दों से प्रभावित होती है। इसलिए भारतीय चुनावी व्यवहार को बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है।

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी व्यवहार का बदलता स्वरूप

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक तंत्र है, जहाँ चुनाव केवल प्रतिनिधियों के चयन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि जनता की राजनीतिक चेतना, सामाजिक संरचना और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिबिंब भी हैं। चुनावी व्यवहार से तात्पर्य उन सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से है, जो मतदाता के मतदान निर्णय को प्रभावित करते हैं। भारत में स्वतंत्रता के बाद से लेकर वर्तमान समय तक चुनावी व्यवहार में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। इन परिवर्तनों के पीछे सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा का विस्तार, आर्थिक विकास, सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया का प्रभाव, राजनीतिक दलों की बदलती रणनीतियाँ तथा मतदाताओं की बढ़ती जागरूकता जैसे अनेक कारण उत्तरदायी हैं।

स्वतंत्रता के बाद हुए प्रारंभिक चुनावों में मतदाताओं का मतदान व्यवहार मुख्यतः राजनीतिक दलों के प्रति निष्ठा, स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत तथा राष्ट्रीय नेताओं के प्रभाव से निर्धारित होता था। उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का व्यापक जनाधार था और अधिकांश मतदाता उसी के पक्ष में मतदान करते थे। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में जाति, धर्म और स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों का मतदान पर गहरा प्रभाव था।

समय के साथ भारतीय समाज में शिक्षा का प्रसार, नगरीकरण, आर्थिक उदारीकरण तथा संचार क्रांति ने मतदाताओं की राजनीतिक सोच को बदल दिया। आज मतदाता केवल जाति या धर्म के आधार पर मतदान नहीं करता, बल्कि सरकार के कार्यों, विकास योजनाओं, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत सुविधाओं, महँगाई, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा सुशासन जैसे मुद्दों का भी मूल्यांकन करता है। इससे चुनावी व्यवहार अधिक जागरूक, विवेकपूर्ण और मुद्दा-आधारित होता जा रहा है।

वर्तमान समय में विकास आधारित राजनीति चुनावी व्यवहार का एक महत्वपूर्ण आधार बन गई है। सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा, डिजिटल सुविधाएँ और रोजगार जैसे विषय चुनावी अभियानों के केंद्र में हैं। मतदाता अब यह देखता है कि सरकार ने उसके जीवन स्तर में कितना सुधार किया है। यद्यपि जाति और धर्म का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, फिर भी विकास और सुशासन जैसे मुद्दों का महत्व पहले की तुलना में बढ़ा है।

सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने चुनावी व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। फेसबुक, एक्स (पूर्व में ट्विटर), इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सऐप जैसे माध्यम राजनीतिक दलों और नेताओं को सीधे मतदाताओं तक पहुँचने का अवसर प्रदान करते हैं। डिजिटल प्रचार, ऑनलाइन रैलियाँ, वीडियो संदेश तथा लक्षित विज्ञापन चुनाव प्रचार के महत्वपूर्ण साधन बन चुके हैं। इससे सूचना का प्रसार तेज हुआ है, लेकिन फेक न्यूज, दुष्प्रचार और भ्रामक सूचनाओं की चुनौती भी सामने आई है।

युवा मतदाताओं की बढ़ती संख्या ने भारतीय चुनावी राजनीति को नई दिशा दी है। भारत की बड़ी युवा आबादी रोजगार, स्टार्टअप, शिक्षा, तकनीकी विकास, पारदर्शिता, भ्रष्टाचार-मुक्त शासन और डिजिटल सेवाओं जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देती है। पहली बार मतदान करने वाले मतदाता अक्सर पारंपरिक राजनीतिक समीकरणों की अपेक्षा भविष्य की संभावनाओं और नीतिगत मुद्दों पर अधिक ध्यान देते हैं।

महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी भी चुनावी व्यवहार में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। अनेक राज्यों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर या उससे अधिक दर्ज किया गया है। महिलाओं के लिए चलाई गई विभिन्न सरकारी योजनाएँ, जैसे स्वच्छ ईंधन, स्वास्थ्य, आवास, वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम, उनके मतदान निर्णयों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में शामिल हैं। इससे महिलाओं की स्वतंत्र राजनीतिक पहचान भी मजबूत हुई है।

भारतीय चुनावी व्यवहार में नेतृत्व की छवि का महत्व भी लगातार बढ़ा है। आज मतदाता राजनीतिक दलों के साथ-साथ नेताओं की ईमानदारी, प्रशासनिक क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता, जनसंपर्क तथा संकट प्रबंधन की क्षमता का भी मूल्यांकन करता है। राष्ट्रीय और राज्य स्तर के नेताओं का व्यक्तित्व कई बार चुनाव परिणामों को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है।

इसके अतिरिक्त कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव भी वर्तमान चुनावी व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, जनधन खाते, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री आवास योजना और अन्य सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के लाभार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर मतदान निर्णय लेने लगे हैं। इससे लाभार्थी-आधारित राजनीति का महत्व बढ़ा है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

हालाँकि भारतीय चुनावी व्यवहार में परिवर्तन के बावजूद जाति, धर्म और क्षेत्रीय पहचान का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। अनेक राज्यों में राजनीतिक दल अभी भी जातीय समीकरणों, धार्मिक ध्रुवीकरण और क्षेत्रीय मुद्दों के आधार पर चुनावी रणनीति बनाते हैं। इसलिए भारतीय चुनावी व्यवहार को केवल एक कारक से नहीं, बल्कि अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के समन्वित प्रभाव के रूप में समझना चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी व्यवहार का बदलता स्वरूप लोकतांत्रिक व्यवस्था की परिपक्वता, सामाजिक परिवर्तन तथा राजनीतिक चेतना के विकास का स्पष्ट संकेत है। स्वतंत्रता के बाद के प्रारंभिक चुनावों में जहाँ मतदान का आधार मुख्यतः जाति, धर्म, स्थानीय नेतृत्व तथा राजनीतिक दलों के प्रति निष्ठा था, वहीं वर्तमान समय में विकास, सुशासन, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, राष्ट्रीय सुरक्षा, नेतृत्व की विश्वसनीयता तथा जनकल्याणकारी योजनाएँ मतदाताओं के निर्णय को अधिक प्रभावित कर रही हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय मतदाता पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक, सूचनापरक और उत्तरदायी हुआ है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार, सोशल मीडिया के प्रभाव, युवा मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी तथा महिलाओं की सक्रिय राजनीतिक उपस्थिति ने चुनावी व्यवहार को नई दिशा प्रदान की है। इसके साथ ही राजनीतिक दलों की चुनावी रणनीतियों, डिजिटल प्रचार, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण आधारित कल्याणकारी योजनाओं तथा निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाने के प्रयासों ने भी चुनावी व्यवहार को प्रभावित किया है। यद्यपि जाति, धर्म और क्षेत्रीय पहचान जैसे पारंपरिक कारकों का प्रभाव अभी भी अनेक क्षेत्रों में विद्यमान है, फिर भी मतदाता अब इनसे आगे बढ़कर शासन की गुणवत्ता, विकास कार्यों तथा जनहितकारी नीतियों का मूल्यांकन करने लगा है।

वर्तमान संदर्भ में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष फेक न्यूज, धनबल, बाहुबल, चुनावी ध्रुवीकरण तथा दुष्प्रचार जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। इन चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मतदाता जागरूकता, राजनीतिक शिक्षा, मीडिया की उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका तथा निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। लोकतंत्र की सफलता केवल स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनावों पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि जागरूक, विवेकशील और उत्तरदायी मतदाताओं पर भी आधारित होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र में चुनावी व्यवहार निरंतर परिवर्तनशील एवं बहुआयामी प्रक्रिया है। यह परिवर्तन लोकतांत्रिक मूल्यों की मजबूती, नागरिकों की बढ़ती राजनीतिक चेतना तथा शासन के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को प्रतिबिंबित करता है। भविष्य में यदि चुनावी प्रक्रिया अधिक पारदर्शी, समावेशी और मुद्दा-आधारित बनती है, तो भारतीय लोकतंत्र और अधिक सुदृढ़, उत्तरदायी तथा जनोन्मुखी स्वरूप प्राप्त करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अवस्थी, ए. एवं अवस्थी, महेश. (2020). भारतीय शासन एवं राजनीति. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
2. फाडिया, बी. एल. (2022). भारतीय शासन एवं राजनीति. आगराः साहित्य भवन पब्लिकेशन्स ।
3. कश्यप, सुभाष सी. (2021). हमारा संविधान. नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।
4. कश्यप, सुभाष सी. (2026). भारत का संविधानः संक्षिप्त परिचय. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
5. कोठारी, रजनी. (1970). भारत में राजनीति (हिंदी संस्करण). नई दिल्लीः ओरिएंट लॉन्गमैन।
6. बसु, डी. डी. (2021). भारत के संविधान का परिचय (हिंदी संस्करण). नई दिल्लीः लेक्सिसनेक्सिस ।
7. यादव, योगेन्द्र. (1999). ''परिवर्तन के दौर में चुनावी राजनीति''. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली।
8. कुमार, संजय. (2022). भारत में चुनावी राजनीति एवं मतदान व्यवहार. नई दिल्लीः रूटलेज।
9. मोहन, अरविन्द. (2024). जातियों का लोकतंत्र: जाति और चुनाव. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन। चुनावी लोकतंत्र में जाति और मतदान व्यवहार का समकालीन विश्लेषण।
10. मोहन, अरविन्द. (2024). जातियों का लोकतंत्र: जाति और राजनीति. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
11. भारत निर्वाचन आयोग. (2024). लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024: सांख्यिकीय प्रतिवेदन. नई दिल्लीः भारत निर्वाचन आयोग।
12. भारत सरकार. (2023). इंडिया ईयर बुक 2023. नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
13. विकासशील समाज अध्ययन पीठ (ब्ैक्ै-लोकनीति). राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (छंजपवदंस म्समबजपवद ैजनकपमे). नई दिल्ली।
14. सिंह, एम. पी. एवं सक्सेना, रेखा. (2019). भारतीय राजनीति: समकालीन परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: पियर्सन इंडिया।
15. चावला, नवीन. (2019). हर वोट मायने रखता है: भारत के चुनावों की कहानी (हिंदी संस्करण). नई दिल्लीः हार्पर कॉलिन्स।